इमाम हसन अस्करी (अ0) खुदाई धाक-दबदबे का प्रतिबिम्ब

म0 र0 आबिद

इमाम हसन अस्करी (अ0) 8 या 10 रबीउस्सानी 232 हि0 (दिसम्बर 846 ई0) को मदीने में पैदा हुए और 8 रबीउल अव्वल 260 हि0 (जनवरी 874 ई0) को 28 साल की आयु में सामर्रा में शहीद कर दिये गये।

आप 20 या 23 साल अपने महामहिम पिता के साथ रहे, जिसमें लगभग एक साल मु'तज़ अब्बासी की ख़िलाफत के काल में गुज़रा फिर एक साल मुहतदी ने शासन किया और उसके बाद मु'तमद अब्बासी की ख़िलाफत का समय आया। इस उचक्के अब्बासी शासक ने अपने राज्य के पाँचवे साल अपने हितैषियों के द्वारा अपको ज़हर देकर शहीद किया।

आपकी इमामत का ज़माना पाँच साल आठ महीने है। इस अवधि का अधिक्तर भाग आपने बन्दीगृह या नज़रबन्दी में बिताया है।

स्वर्गीय कुलैनी ने 'काफ़ी' में यह बयान लिखा है कि जिस समय सालेह बिन वसीफ़ आपका जेलर था कुछ अब्बासी ख़ानदान के लोग, सालेह बिन अली और दूसरे गुमराह और धर्म के दुश्मन सलेह बिन वासीफ़ के पास आये और कहा कि जितना हो सके हज़रत (इमाम अ0) पर सख़्ती करो और एक पल के लिए भी उन्हें चैन से न बैठने दो।

सालेह बिन वसीफ़ ने कहा – इससे ज़ियादा और क्या कर सकता था कि बहुत ही कुभाव, दुराचारी लोगों को कष्ट देने के लिये आप पर लगा दिया था कि वह आपको चैन न लेने दें। लेकिन वह लोग आपके आचरण, चरित्र और इबादत से प्रभावित होकर नमाज़–रोज़े के पाबन्द (नियमित) गये हैं।

सालेह बिन अली ने उन दोनों को बुलाकर खूब डाँटा और कहा कि तुम लोग इस व्यक्ति से अच्छा बरताव क्यों करते हो? आख़िर तुम्हें क्या हो गया है? उन्होंने जवाब दिया कि हम ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या कहें जो रात अल्लाह की इबादत (भक्ति) और अपने पालने वाले से मुनाजात (मौन भजन प्रार्थना) में बिता देता है, दिन में बराबर रोज़ा रखता है, अल्लाह की याद के अलावा कुछ नहीं बोलता, अपना समय बेकार की चीज़ों में नहीं गंवाता, जब हमारी ओर देखता है तो उसकी हैबत (रोब, दबदबे) से हमारा शरीर काँपने लगता है और जैसे (हमारी) पूरी सकत छिन्न हो जाती है। जब अब्बासियों ने यह सुना तो शर्म के मारें वहाँ से चले गये।

फ़ज़ाएल (श्रेष्टताओं) की कहानी दुश्मन की ज़बानी

अहमद बिन ख़ाकान इमाम अस्करी (अ0) का मशहूर दुश्मन था। आप (अ0) के बारे में

कहता है कि मैंने सामर्रा में हसन बिन अली (इमाम अस्करी अ0) से ज़ियादा स्थिरता, दृढ़ता, पवित्रता, त्याग, महिमा और महत्ता का मालिक किसी को नहीं पाया। बनी हाशिम 'आप (अ0) के घर वाले' यहाँ तक कि समय के शासक आपको सभी लोगों पर चाहे वह आप से उम्र में बड़े ही क्यों न हों अगुवा करते (प्राथमिक्ता देते)। इसी तरह फौजी अफसर, मंत्री, लेखक और जनसाधारण आपके विशेष सम्मान को मानते थे और मैंने अधिकारियों, लेखकों, न्यायिकों, धर्मशास्त्रियों और जनमानुषों में जिससे भी आपके बारे में पूछा कि आपके विषय में असाधारण आदर भाव रखते हैं और आपको प्रतिष्ठा और स्तर से सर्वोच्च स्थान और वर्ग पर प्रतिष्ठित जानते हैं। खुदा की क़सम उनके किसी दोस्त या दुश्मन से उनकी तारीफ के अलावा आज तक कुछ नहीं सुना। वह उन्हें इज़्ज़त, सम्मान और सलाम–दुरूद के साथ याद करते हैं और यही नहीं मेरे बाप उबैदुल्लाह बिन ख़ाकान कहा करते थे कि अगर ख़िलाफ़त (शासन) अब्बासियों के निकल जाए तो इब्नुर्ररज़ा (रज़ा के बेटे इमाम अस्करी अ0) के अलावा इसका हक़दार कोई नहीं क्योंकि निर्मलता, पवित्रता, त्याग, लालसा–विरोध, सन्यास, इबादत, खुदा–भक्ति और सभी सराहनीय सदाचार में आपको सभी दूसरे लोगों पर महत्ता मिली हुई है।

इबादत और पाक चलन

शाकिर नामी आपका सेवक आपके बारे में कहता है कि इमाम अस्करी (अ0) जब रास्ता चलते थे तो गली बाज़ार में चाहे जितना शोर–शराबा हो थम जाता था, इन्सान तो इन्सान जानवर तक किनारे होकर आपके लिए रास्ता छोड़ देते थे कि इस भीड़–भाड़ में आप आराम से चले जायें।

हज़रत (अ0) जब इबादत की मेहराब (उपासना–कक्ष) में खड़े होते थे तो आप अपने सजदे को इतना लम्बा करते थे कि कभी–कभी मैं सो जाता था और जब आँख खुलती थी तब भी आपको सजदे में ही अपने खुदा से राज़–न्याज़ करता हुआ पाता था।

उपदेश

हज़रत (अ0) ने अपने एक ख़त में इब्ने बाबवय क़ुम्मी को लिखा :–

''......................तुम्हें धैर्य और आसानी की प्रतीक्षा करना चाहिए क्योंकि इस्लाम के रसूल (स0) ने इरशाद किया है कि मेरी उम्मत (समुदाय) का सबसे अच्छा काम आसानी का इन्तिज़ार (प्रतीक्षा) और शिया निरन्तर कष्ट, दुख का शिकार रहेंगे यहाँ तक कि मेरा बेटा ज़हूर करेगा (प्रकट होगा) जिसकी बशारत (सुसमाचार) देते हुए रसूल (स0) ने फ़रमाया :– वह ज़मीन को न्याय–औचत्य से भर देगा जिस तरह अत्याचार और ज़बरदस्ती से भरी होगी'' ऐ शेख़–ए–अबुलहसन अली सब्र (धैर्य) करो और हमारे शियों को धैर्य की ताकीद (आग्रह/आहवान) करो क्योंकि धरती का मालिक खुदा है वह जिसे चाहे माफ़ कर दे (मोक्ष दे) और अन्त परिणाम तो (अल्लाह) से डरने वालों के लिए ही है।

हम इस इमाम के जिसका कहा मानना ज़रूरी है शहीदी दिवस पर सभी मुसलमानों, दुनिया भर के शियों और ख़ास तौर से आपके सुपुत्र हज़रत हुज्जत इब्नुल हसन (इमाम मेहदी अ0) की सेवा में शोक संवेदना प्रकट करते हैं और खुदा से आप (अ0) और आप के सुपुत्र (अ0 फ0) का अनुसरण की नेमत (भलाई) चाहते हैं।